राम अवतार बैरवा

साहित्य की रोशनी का क्षितिज

जो लेखन कार्य से जुड़े हैं, वो यह अच्छी तरह जानते हैं- कितना मुश्किल होता है शब्द खोजना, भावों में डूबना, परिस्थितिनुसार खुद को उसमें ढालना और उसके अच्छे - बुरे का पूर्व और पूर्ण आकलन कर लेना। सबको रामायण आज तक की सबसे बेहतर रचना लगती हैं। तुलसी को आज भी जनमानस सभी युगों का सबसे बड़ा रचनाकार मानता है । राम के बड़े भक्त और बड़े सेवक तो यह भी मानते हैं कि प्रभु श्रीराम ने या हनुमान जी ने खुद उन्हें रामायण बोलकर लिखवाई थी । ये मिथक तो यहीं इसलिए टूट जाता है कि रामायण की कथा तो तुलसी से पहले समाज में मोजूद थी। वाल्मीकि और तुलसी की रामायण में मूलभूत अंतर भी नहीं है । सारा खेल संवाद गढ़ने और उसे दोहा-चौपाई में ढालने का था । यह महीन और अदभुत खेल शत-प्रतिशत तुलसी ने खेला था । राम को कभी, किसी व्यक्ति में बुराई नज़र आती ही नहीं थी। वो कैसे रावण का किरदार निभा सकते थे ? लक्ष्मण को मूर्छित करने का संवाद तो घटित होने के बाद भी हरगिज़ ही वे नहीं लिखवाते ,उनकी बुद्धि और जिव्हा कांप उठती । भरत के मन में वो यह विचार कभी ला ही नहीं सकते थे कि चित्रकूट पर भरत पूरी सेना के साथ राम पर आक्रमण के लिए आ रहे हैं। लेखक अवश्य हर पात्र के बीच से गुज़र सकता है। वो राम भी बन सकता है, रावण भी, भरत भी, लक्ष्मण भी यहां तक कि बाली और मकरध्वज भी। उजालों तक पहुंचने के लिए उसे पग-पग और पल-पल पर अंधियारों से लड़ना पड़ता है। रामायण कितनी अदभुत है कि राम को कैकयी का सबसे प्रिय पुत्र बताया है और उसी को वनवास भी दिलाया है। भरत इसलिए राज नहीं संभालता कि वचन कैकयी ने मांगे थे। पूरी रामायण में शत्रुघ्न का किरदार बहुत छोटा था पर घोर संकट में बिना अनुभव के चौदह बरस अवध का राजकाज संभालना और पूरे परिवार की सुरक्षा लेखक की सोच का ऐसा छिपा हुआ पन्ना है, जिसमें राजनीति के सारे छल-कपट तिरोहित कर उसकी तमाम अच्छाईयों को बिना लिखे बयां किया गया है। साहित्य में बहुत सी बातें कही नहीं जाती है, समझी जाती हैं। अच्छा साहित्य भी वही होता है, जिसमें पूरा पन्ना खाली हो और फिर भी पाठक को अपने मन की बात नज़र आ जाए । प्रकाश चिरागों से नहीं होता है, जिगर से होता है। मन में ठानी बात पार अवश्य निकलती है । मन ईश्वर का वह घर है, जिसमें बुरे विचार प्रवेश करते ही, ईश्वर उसे खाली कर देता है । दृष्टि से लाचार व्यक्ति मन के इशारे से इसीलिए चल लेते हैं । दृष्टिबाधित युवती सड़क पार करने वाले व्यक्ति ने उसकी छड़ी को किस तरह पकड़ा है, इतने भर से वह उस युवक के मन को पढ़ लेती है । साहित्य में रचनाकार के अंधियारे संघर्ष होते हैं, जो रोशनी की तलाश में पन्नों पर महज एक अच्छी रचना के ध्येय में दम तोड़ देते हैं। उसकी रोशनी पाठक को खुद तलाशनी होती है ।